International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2016; Page No. 49-51

सोनघाटी की विरासत में सूफीमत

डॉ. गजाला शाहीन
बिछिया, रीवा मध्य प्रदेश भारत

सारांश
मानव का स्वभाव है कि वह अपने समस्त उपलब्ध साधनों का प्रयोग करता है, आर्थिक, सामाजिक तथा धर्म के क्षेत्र में इन साधनों का प्रयोग केवल सुख एवं शान्ति प्राप्त के लिए ही करता है। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में तन, मन, धन, वचन का प्रयोग अन्तिम लक्ष्य केवल मन एवं आत्मा में शान्ति प्राप्त करना ही होता है। सोनांचल घाटी क्षेत्र में जब से मानव पैदा हुआ विभिन्न कालों में विभिन्न धर्म सम्प्रदाय, मत–मतों का प्रचलन होता रहा है, जिस पर प्रकाश डालने के लिए हमारे यहाँ के विद्वान इतिहासकारों ने भरसक प्रयत्न किया है।

मूलशब्दः सोनघाटी, सूफीमत, आर्य, द्रविण

प्रस्तावना

भौगोलिक स्थितिः

सीधी जिला के उत्तर–पश्चिम में रीवा, उत्तर–पूर्व में मिर्जापुर एवं सोनभद्र तथा दक्षिण में शहडोल, दक्षिण–पूर्ण में सरगुजा एवं पश्चिम में सतना जिलों से घिरा हुआ है। यह भू–भाग प्राकृतिक संपदा के दृष्टिकोण से पर्याप्त धनी है।[1] सोनघाटी कैमोर श्रेणी के दक्षिणी भाग की ओर फैली हुई है। कैमोर श्रेणी के दक्षिण में विन्ध्य महा समूह के चट्टानों के मध्य सोन नदी उत्तर से पूर्व की ओर सकरी होती जाती है। इस घाटी का अधिकतर भाग समतल एवं उपजाऊ है। घाटी का उत्तरी हिस्सा खेतों की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है, इस घाटी का ढ़ाल पश्चिम से पूर्व की ओर है। इस नदी घाटी की ऊँचाई 300 मीटर के लगभग है।[2]

सोननदी का उद्गम स्थान अमरकण्टक है, इस उद्गम स्थान को सोनमूड़ा के नाम से जाना जाता है। उद्गम स्थल पर आम्रवृक्ष के नीचे एक छोटा सा चौकोर कुण्ड़ है, वहाँ से पतली धारा प्रवाहित होती है, जो आगे चलकर, विशाल रूप का आकार ग्रहण कर लेती है। सोनमूड़ा में एक ढ़ाल के ऊपर पानी के बुलबुले निकलते दिखते हैं, यह बुलबुले आगे कहा विलीन हो जाते है पता नहीं लगता।[3] सोननदी का उद्गम स्थल यहाँ की प्राकृतिक अवस्था क्षेत्र एवं जलवायु कितनी पावन एवं पवित्र है, जहाँ आकर मानव शान्ति एवं मोक्ष की अनुभूति प्राप्त करता है। आर्यों के आगमन से पूर्व यहाँ प्रमुख जनजातियाँ थी जिनमें गोड़, कोल, बैगा, खैरवार एवं भील जनजातियाँ थी। प्रो./डॉ. ए.के. सिंह ने इस संबंध में लिखा है कि–

"वृक्ष, प्रस्तर, टीले एवं नदियाँ उनके देवी, देवताओं के निवास स्थान है। घासी, घमसान और काली, ग्राम्य देवता एवं ग्राम्यदेवी है। जबकि ठेमा, ठाकुर और दुल्हा देव कुल देवता है। एक अन्य देवी फूलमती गृहदेवी के रूप में एवं अंगारमती गृहदेवता के रूप में प्रतिष्ठित एवं पूज्य है।[4] सीधी जिले के आदिवासी लोग स्वभाव से मेहनती, परिश्रमी एवं सच्चे होते हैं। शरीर से बलिष्ठ होने के कारण दिन भर कार्य में लगे रहते है। आदिवासियों का कृषि मुख्य व्यवसाय है, परन्तु कृषि करने का तरीका प्राचीन है, धीरे–धीरे सम्पन्न आदिवासी कृषकों द्वारा आधुनिक उपकरणों का प्रयोग किया जाने लगा आदिवासियों का जीवन प्रकृति पूजा पर आधारित है, सीधी जिले के आदिवासी आज भी सामान्यतः आम, बरगत, पीपल, महुआ, पलास, बेल, तुलसी, आंवला आदि वृक्ष की तथा घोड़ा, तोता, मैना, कबूतर, चील आदि पशु पक्षियों की पूजा प्रचलित है। आदिवासियों में नृत्य कला का प्रचलन प्राचीनकाल से है।[5]

विन्ध्य क्षेत्र एक ऐसा अद्भुत क्षेत्र है जो आदिकाल से अवतारी पुरूषों, देवी, देवताओं, संत, महात्माओं का सानिध्य व निकटता प्राप्त करता रहा है, विन्ध्य क्षेत्र के बघेलखण्ड में स्थित सीधी जिला व सोनांचल घाटी भी इन साधु संत महात्माओं व अवतारी पुरूषों की सानिध्यता प्राप्त करता है। यहाँ आर्य, द्रविण, शैव, शाक्त, वैष्णव, बौद्ध, जैन, पारसी, इसाई, मुस्लिम धर्म एवं सूफीमत व सूफी, संत महात्माओं का वर्णन समय–समय पर दृष्टिगोचर हुए है। अतः इस आलेख में, सोनघाटी की विरासत में सूफीमत का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

अल्लाह के दर्शन के लिए "तरीकत" के मार्ग पर चलने वाले इस्लाम के रहस्यवादी साधक "सूफी" कहलाते है।

बी.एन. लुनिया के अनुसार "सूफीमत गहन भक्ति का धर्म है, प्रेमी इसकी तीव्र उत्कण्ठा हैं कविता नृत्य, भजन इसकी पूजा है और ईश्वर में विलीन हो जाना इसका उद्देश्य है। धार्मिक कट्टरता से विमुक्त दार्शनिक, लेखक कवि और रहस्यवादी सूफीमत में आनन्द लेते थे। सूफियों के लिए सभी धर्म समान थे और वे सभी धर्मावलम्बियों को अपने सिद्धान्तों का उपदेश देते थे।" हमारे बघेलखण्ड क्षेत्र के निकटतम स्थानों में सबसे अधिक धार्मिक स्थल प्रयागराज इलाहाबाद है जहाँ की धार्मिक और अध्यात्मिक महत्वता सबको ज्ञान है, वहीं सूफियों के कई केन्द्रीय स्थान है, जिनका महत्वपूर्ण और प्रभावशाली इतिहास है। दायरा शाह मुहिबुल्ला फारूकी का मजार दारागंज इलाहाबाद में है और वही सूफी मत के

प्रचार प्रसार का कार्य पूर्ण किया। उन्हीं के खलीफा अहमदमियाँ फारूकी हुए है।

जिस प्रकार शाक्त मत में चक्र में बैठने का विधान है उसी तरह सूफी, संत और उनके भक्तगण अध्यात्मिक बैठक के आयोजन में एक ही दायरे में बैठते है। उस दायरे से निकले हुए अपने गुरू के विचार एवं भावनाओं का प्रचार करने शेख मुहीयुद्दीन अहमद् उस्मानी आये, उनका कर्म क्षेत्र सोनघाटी क्षेत्र रहा, अपने शिष्य को जब क्रिया क्षेत्र और विश्वास के क्षेत्र में परिपक्व पाते है और उनके जप तप से प्रसन्न हो जाते है तो उन्हें अपना खलीफा बना लेते है और लिखित रूप से अधिकृत करते है, उस दस्तावेज या लेख को खिलाफतनामा कहते है और जिन्हें यह पद दिया जाता है, खलीफा कहते है। आजकल सीधी क्षेत्र में अस्फाक साहब उनके खलीफा है उन्होंने सूफीमत का प्रचार–प्रसार का कार्य इस क्षेत्र में बड़े परिश्रम से कर रहे है। एक मदरसा भी है जिसमें छात्रों को शिक्षित किया जाता है।[6] आसपास के भक्तगण अपने कष्टनिवारण के लिए इनकी सेवा में आते है और अध्यात्मिक लाभ उठाते है। इन आने वालों में जातिपात का भेदभाव नहीं किया जाता है, क्योंकि सूफीमत का सबसे बड़ा उद्देश्य प्रेम है।

हमारे बघेलखण्ड के प्रथम इतिहासकार मौलवी रहमानअली के गुरू शाह मोहम्मद हुसैन है।[7] जिनका भी संबंध इलाहाबाद के दायराशाह मुहिबुल्ला (दारागंज इलाहाबाद) से है जिस सिलसिले से वर्तमान में सीधी जिला में खलीफा मौजूद है। सीधी जिले में अन्य और भी सूफी बुजुर्ग यहाँ सूफीमत का प्रचार–प्रसार करने आते रहे है जिनमें मौलाना मोहम्मद मंजूर आलम है, जिनके पिता मौलवी मोहम्मद बाकर थे। रीवा में आपकी पैदाइस लगभग 1874 ई. में हुई थी। उर्दु, फारसी और उर्दू के आप आलिम थे। रीवा राज्य में उस समय महाराजा वेंकटरमण का काल था, स्वयं महाराजा रीवा, मौलाना के रचनाओं वे लेखों के प्रशंसक थे। मौलाना मोहम्मद मंसूर आलम हाशमी अलफिरदौसी बेखारी इलाहाबादी सुम्मुर रिवानी की अनेकों पुस्तकें लिखित, अप्रकाशित एवं प्रकाशित हुई। प्रो. जैन ने लिखा है कि हिन्दू मुस्लिम एकता की भावना अधिक बूढ़े होने पर भी मौलाना नवयुवकों की भांति सामाजिक सेवा में संलग्न रहते थे। गीता का अनुवाद आपने उर्दू और हिन्दी भाषाओं में किया जा अप्रकाशित है।[8] मौलाना मन्जूर आलम, सीधी जिला में गये और वहाँ की आवाम से मिले, उनके दिलों में प्रेम, भाईचारा एवं ईश्वर के प्रति श्रद्धा भक्ति की भावना जगाई। इस्लाम की सच्चाई शान्ति प्रियता, समर्पण एवं सूफीमत के विचारों से इस सोनघाटी के लोगों को प्रभावित किया। जिससे लोग अपके कायल हो गये तथा उनके विचारों, सिद्धान्तों को अपनाकर अपने जीवन के अशिक्षा रूपी अंधकार से निकल कर शिक्षा की ज्योति में आ सके। आप सोनघाटी क्षेत्र की विरासत में वफात (मृत्यु) पाये लेकिन आपको वहाँ से लाकर, रीवा के घोघर कब्रिसतान में मदफून (दफन) व सुपुर्दे खाक किया गया।[9]

दूसरे बुजर्ग आला हजरत मुफ्ती आजम मुस्तफा रजा अहमद (बरेली) है। जिनका जन्म 18.07.1892 ई. को बरेली शरीफ में हुआ, जो सीधी जिला में सफी मत के प्रचार के लिए गये और वहाँ के लोगों से मिले। आला हजरत के सिद्धांत व विचारों को देखते व समझते हुए उनसे बहुत से लोग मुरीद (दीक्षित) हुए।[10]

अन्य सफी बुजुर्ग सैयद नेहाल आलम का भी दौरा सीधी जिला में रहा, इसके अलावा देवसर, सिंगरौली, रीवा, धनपुरी आदि स्थानों में इस्लाम की शिक्षा एवं सूफी मत का प्रचार करने के लिए जाते–आते रहते थे। सैयद नेहाल आलम देवसर में एक मदरसा दीनी तालीम के लिए खोले थे जिसमें बच्चों को इस्लाम की शिक्षा दीक्षा दी जाती थी। इन स्थानों में आपके कई मुरीद व चले हुए है, आपकी वफात के बाद आपको धनपूरी में सुपुर्दे खाक कर दिया गया जहाँ पर आपकी मजार बनी हुई है।[11]सीधी जिले के चुरहट में हजरत मस्तान शाह बाबा का मजार मुबारक पेट्रोल पम्प के पीछे, जामा मस्जिद के पास स्थित है। आपका उर्स हर साल 03 जून को बड़ी श्रद्धा व भक्ति के साथ मनाया जाता है और सीधी जिला में ही कब्रिस्तान के पास सिन्धी चौराहे के समीप दो दरगाहें है जिनमें से एक बुजुर्ग का नाम हजरत तुराब शाह बाबा रहमतुल्ला अलैह है।[12] समस्त मानव समजा भक्तिभाव से सूफी बुजुर्ग के मजार शरीफ दरगाह, आस्ताना, दायरा आदि स्थानों में एकत्रित होते हैं और अपने प्रेम भाईचारा का प्रदर्शन बड़े उल्लास के साथ करते है, जिसका सबसे बड़ा उदाहरण सोनघाटी की विरासत में हर धर्म जाति, वेश–भूषा के साथ सूफीमत का प्रचार प्रसार हुआ है।

सन्दर्भः

1. इतिहास अनुशीलन – लेख – कुसमी (सीधी) से प्राप्त मंदिर अवशेष एक विहंगम दृष्टि (सेमरा मंदिर के विशेष संदर्भ में), डॉ. ए.के. सिंह पृष्ठ, 100 सन् दिसम्बर 2001।
2. सोनांचलम् नमामि– डॉ. संतोष सिंह एवं डॉ. अनिल कुमार सिंह पृष्ठ 11, सन् 2003।
3. स्मारिका–विन्ध्य संभागीय कांग्रेस कार्यकर्त्ता सम्मेलन रीवा, पृष्ठ 38, सन् 10 मार्च 1973।
4. इतिहास अनुशीलन – लेख–कुशमी (सीधी) से प्राप्त मंदिर अवशेष एक विहंगम दृष्टि (सेमरा मंदिर के विशेष संदर्भ में)–डॉ. ए.के. सिंह पृष्ठ–101 सन् दिसम्बर 2001।
5. विन्ध्य क्षेत्र का इतिहास – संस्कृति एवं पुरातत्व – नेशनल रिसर्च सेमीनार– डॉ. एस.एन. मिश्र पृष्ठ 114, 115 सन् 25, 26 फरवरी 1995।
6. सैय्यद तौसीफ अली हारवानी से साक्षात्कार द्वारा मिली जानकारी। रीवा दिनांक 12.03.2013।
7. मोहम्मद अनीश खान, लघुशोध प्रबंध–रीवा नगर का मुस्लिम समाज पृष्ट 70।
8. प्रो. श्रीचन्द जैन–मध्यप्रदेश के मुसलमान कवि, पृष्ठ 121।
9. मास्टर अब्दुल गफ्फार खान (दास) एवं कनीज फातमा पुस्तकालय बिछिया रीवा से मिली जानकारी दिनांक 11.03. 2013
10. मौलाला अब्दुल मुजतजी रिजवी, तजकेरा मेशाके कादरिया रिजविया पृष्ठ 503, सन् 1989।

11. महबूब खान निवासी बिछिया रीवा से साक्षात्कार द्वारा मिली जानकारी। 12.03.2013।
12. उर्स के दौरान छपे पोस्टर से मिली जानकारी, सन् 2011 एवं साक्षात्कार द्वारा सीधी निवासी जावेद खान से मिली जानकारी।